पन्दरहवी सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी दامت برکاتہم العالیہ की ह़याते मुबा-रका के रोशन अवराक़

तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ

क़िस्त़ 4

शौक़े इ़ल्मे दीन

SHOUQE ILME DEEN (HINDI)

इ़ल्मे दीन सीखना फ़र्ज़ है 7

क्या सनद याफ़्ता ही आ़लिम होता है ? 13

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने इ़ल्मे दीन कैसे ह़ासिल किया ? 25

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का अन्दाज़े मुता-लआ़ 26

अदब की 3 ह़िकायात 34

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की वुस्अ़ते इ़ल्मी 38

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)

SC1286

المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ،
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

हमें अमीरे अहले सुन्नत से प्यार है

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को **अल्लाह** तआ़ला ने अपने **ह़बीब**, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में ऐसे अ़ज़ीमुश्शान औसाफ़े कमालात से नवाज़ा है कि फ़ी ज़माना इस की मिसाल मिलना मुश्किल है। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **बचपन** को देखिये तो दिल मचल जाएगा कि काश मेरा बचपन भी इसी त़रह़ तक़्वा व परहेज़ गारी से मुज़य्यन होता, **जवानी** का आ़लम देखने वाले पुकार उठे कि जवान हो तो ऐसा ! **मौजूदा** त़र्ज़े ज़िन्दगी तो ऐसा उ़रूज पर है कि जिस ने देखा उस के दिल में येह ख़्वाहिश जागी कि काश ! मैं भी ऐसा बन जाऊं। बत़ौरे बेटा, बाप, भाई, मुरीद, पीर, आ़लिम, मुबल्लिग़, मुसन्निफ़, ना'त गो शाइ़र अल ग़रज़ जिस हैसिय्यत में भी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका का मुशा-हदा किया जाए तो अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की याद ताज़ा हो जाती है और दिल जोशे अ़क़ीदत से झूम उठता है और ज़बान इस की तरजुमानी यूं करती है कि **"मुझे अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **से प्यार है।"**

"तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه**"** की अब तक 3 क़िस्तें अ़वाम व ख़वास में पहुंच कर मक़्बूलिय्यत ह़ासिल कर चुकी हैं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पन्दरहवीं सदी की वोह अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत हैं जिन्हों ने **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ास करम की बदौलत **इ़ल्म** की रोशनी फैला कर **जहालत** की घटाओं को दूर कर दिया, **सुन्नतों** की बहारें आ़म कर के **बे राह रवी** की चलती आंधियों का ज़ोर तोड़ दिया, **ह़यादारी** के पुर असर दर्स के ज़रीए **बे ह़याई** के दरियाओं का रुख़ मोड़ दिया, लाखों मुसल्मानों को आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुख़्लिसाना काविशों की ब-र-कत से **तौबा** की सआ़दत मिली और वोह अपनी आख़िरत संवारने की कोशिश में लग गए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ात इतनी **अ़ज़ीम** है कि हम इन की शख़्सिय्यत को कामिल त़ौर पर समझने और बयान करने का दा'वा ख़्वाब में तो कर सकते हैं, आ़लमे बेदारी में नहीं, लिहाज़ा आप के हाथों में मौजूद "तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه" आप की ह़याते मुक़द्दसा की झ-लकियां तो पेश करता है, मुकम्मल अ़क्कासी बहुत दुश्वार है। अब **"तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه**"** की चौथी क़िस्त़ बनाम **"शौक़े इ़ल्मे दीन"** आप के सामने पेश की जा रही है। इस रिसाले के मुत़ा-लए से मा'लूम होगा कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तह़रीर व बयान और गुफ़्त-गू में **इ़ल्म** का जो वसीअ़ समुन्दर ठाठें मारता दिखाई देता है, इस की एक वजह आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का **शौक़े मुत़ा-लआ़** भी है।

म-दनी इल्तिजा : ह़स्बे साबिक़ इस क़िस्त़ में भी हम ने बा'दे तह़क़ीक़ **सच** पेश करने की कोशिश की है। **सुनी सुनाई** पर इन्ह़िसार नहीं किया, अगर्चे इस तह़रीर में आप को अ़क़ीदत व मह़ब्बत की ख़ुश्बू महसूस होगी ! और येह फ़ित़री बात है क्यूं कि लगाव व **अ़क़ीदत** से बाला तर हो कर सवानेह़ लिखने का मुत़ा-लबा हवा में दरख़्त उगाने के मु-तरादिफ़ है क्यूं कि शख़्सिय्यत निगारी उसी वक़्त मुम्किन है जब कोई उस शख़्सिय्यत की तह में उतर जाए और उतरने के लिये लगाव का होना बहुत ज़रूरी है। बहर ह़ाल हम मह़्ज़ बशर हैं ख़त़ा से पाक नहीं, फिर कम्पोज़िंग की ग़-लत़ी भी मुम्किन है, इस लिये दर-ख़्वास्त है कि अगर आप को इन रसाइल में किसी क़िस्म की ग़-लत़ी नज़र आए तो अपने नाम व पते के साथ तह़रीरी त़ौर पर हमारी **इस्लाह़** फ़रमा दीजिये। और अगर किसी को इस तज़्किरे में शामिल ह़ालात व वाक़िआ़त के बारे में मज़ीद मा'लूमात हों या कोई मश्वरा देना चाहें तो वोह भी सरे वरक़ की पुश्त पर लिखे हुए फ़ोन नम्बर पर या ब ज़रीअ़ए डाक या बर्क़ी डाक (E.MAIL) राबित़ा फ़रमा लें।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **)**

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और जुमुआ़ के रोज़ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, अल्लाह तआ़ला उस की सो ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा।" (جامع الاحادیث للسیوطی ،الحدیث ۷۳۷۷ ، ج ۳ ، ص ۷۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इल्मे दीन सीखने में मसरूफ़ हो जाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی अपनी मायानाज़ तफ़्सीर "तफ़्सीरे कबीर" में इस आयत "وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا" (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह तआ़ला ने आदम को तमाम नाम सिखाए। (پ۱،البقرۃ:۳۱)) के तह़्त लिखते हैं : सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ से महवे गुफ़्त-गू थे कि आप पर वह़्य आई कि इस सह़ाबी की **ज़िन्दगी** की एक साअ़त बाक़ी रह गई है। येह वक़्त अ़स्र का था। रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब येह बात उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बताई तो उन्हों ने **मुज़्तरिब** हो कर इल्तिजा की : "या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसे **अ़मल** के बारे में बताइये जो इस वक़्त मेरे लिये सब से बेहतर हो।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**इल्मे दीन** सीखने में मश्ग़ूल हो जाओ।" चुनान्चे वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ इल्म सीखने में मश्ग़ूल हो गए और मग़रिब से पहले ही उन का इन्तिक़ाल हो गया। रावी फ़रमाते हैं कि अगर **इल्म** से अफ़्ज़ल कोई शै होती तो रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसी का हुक्म इर्शाद फ़रमाते।

(تفسیر کبیر ، ج۱،ص ٤١٠)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गुनाहों की बख़्शिश

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो बन्दा **इल्म** की जुस्त-जू में जूते या मोज़े या कपड़े पहनता है, अपने घर की चौखट से निकलते ही उस के गुनाह **मुआ़फ़** कर दिये जाते हैं।"

(المعجم الاوسط ، باب المیم ،الحدیث :٥٧٢٢،ج ٤، ص ٢٠٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्म की रोशनी से जहालत और गुमराही के **अंधेरों** से नजात मिलती है। जो ख़ुश नसीब मुसल्मान **इल्मे दीन** सीखता है उस पर रह़मते ख़ुदा वन्दी की छमाछम बरसात होती है। अह़ादीसे मुबा-रका में येह मज़ामीन मौजूद हैं कि जो शख़्स इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये सफ़र करता है तो ख़ुदा तआ़ला उसे **जन्नत** के रास्तों में से एक रास्ते पर चलाता है और त़ालिबे इल्म की ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिये **फ़िरिश्ते** अपने परों को बिछा देते हैं और हर वोह चीज़ जो आस्मान व ज़मीन में है यहां तक कि मछलियां पानी के अन्दर आ़लिम के लिये **दुआ़ए मग़्फ़िरत** करती हैं और **आ़लिम** की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की

फ़ज़ीलत सितारों पर, और उ़-लमा, **अम्बियाए किराम** عَلَیهِمُ السَّلام के वारिस व जा नशीन हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इल्मे दीन सीखना फ़र्ज़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عنہ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं **:** ''طَلَبُ العِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ **या'नी** इ़ल्म का ह़ासिल करना हर मुसल्मान मर्द (व औ़रत) पर **फ़र्ज़** है।

(شعب الإيمان،باب في طلب العلم، الحديث: ١٦٦٥، ج٢، ص٢٥٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर मुसल्मान मर्द व औ़रत पर इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है, (यहां) इ़ल्म से ब क़दरे ज़रूरत शर-ई़ मसाइल मुराद हैं लिहाज़ा रोजे़ नमाज़ के मसाइले ज़रूरिय्या सीखना **हर मुसल्मान** पर फ़र्ज़, है़ज़ व निफ़ास के ज़रूरी मसाइल सीखना **हर औ़रत** पर, तिजारत के मसाइल सीखना **हर ताजिर** पर, ह़ज के मसाइल सीखना **ह़ज** को जाने वाले पर ऐन **फ़र्ज़** हैं लेकिन दीन का पूरा **आ़लिम** बनना फ़र्ज़े किफ़ाया कि अगर शहर में एक ने अदा कर दिया तो सब बरी हो गए।''

(ماخوذ از مراۃ المناجیح، ج۱، ص۲۰۲)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का एक मक्तूब

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने एक मक्तूब में लिखते हैं **:** ''**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अफ़्सोस ! आज कल सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यावी उ़लूम ही की त़रफ़ हमारी अक्सरिय्यत का रुज्ह़ान है। इ़ल्मे दीन की त़रफ़ बहुत ही कम मैलान है। **ह़दीसे पाक** में है **:** طَلَبُ العِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इ़ल्म का त़लब करना हर मुसल्मान मर्द (व औ़रत) पर फ़र्ज़ है। (سنن ابن ماجه ج١ ص ١٤٦ حديث ٢٢٤) इस ह़दीसे पाक के तह़्त मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने जो कुछ फ़रमाया, उस का आसान लफ़्ज़ों में मुख़्तसरन ख़ुलासा अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं। सब में अव्वलीन व अहम तरीन फ़र्ज़ येह है कि **बुन्यादी अ़क़ाइद** का इ़ल्म ह़ासिल करे। जिस से आदमी सही़हुल अ़क़ीदा सुन्नी बनता है और जिन के इन्कार व मुख़ा-लफ़त से **काफ़िर** या **गुमराह** हो जाता है। इस के बा'द मसाइले **नमाज़** या'नी इस के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ तोड़ने वाली चीजे़ं) सीखे ताकि नमाज़ सही़ह़ त़ौर पर अदा कर सके। फिर जब **र-मज़ानुल मुबारक** की तशरीफ़ आ-वरी हो तो रोज़ों के मसाइल, मालिके निसाबे नामी (या'नी ह़क़ीक़तन या हुक्मन बढ़ने वाले माल के निसाब का मालिक) हो जाए तो **ज़कात** के मसाइल, साहि़बे इस्तित़ाअ़त हो तो मसाइले **ह़ज, निकाह़** करना चाहे तो इस के ज़रूरी मसाइल, **ताजिर** हो तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल, **मुज़ारेअ़** या'नी काश्त कार (व ज़मीन दार) पर खेती बाड़ी के मसाइल, **मुलाज़िम** बनने और मुलाज़िम रखने वाले पर इजारे के मसाइल। وَ عَلٰی ھٰذَاالْقِیاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुए) **हर मुसल्मान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है।** इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले **ह़लाल** व **ह़राम** भी सीखना **फ़र्ज़** है। नीज़ **मसाइले क़ल्ब** (बात़िनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिया (बात़िनी फ़राइज़) म-सलन **आ़जिज़ी** व **इख़्लास** और **तवक्कुल** वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और **बात़िनी गुनाह** म-सलन **तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद** वग़ैरहा और **इन का इलाज** सीखना हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज़ से है।''

(ماخوذ از فتاوٰی رضویہ مُخَرَّجہ ج۲۳، ص۶۲۳، ۶۲۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हमारी ह़ालते ज़ार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुन्दरिजए बाला शर-ई अह़काम से मा'लूम हुवा कि इल्मे दीन ह़ासिल करना महज़ चन्द अफ़राद की ज़िम्मादारी नहीं बल्कि अपनी मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मसाइल सीखना हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है मगर अफ़्सोस आज का मुसल्मान ज़िन्दगी की ज़रूरतों, सहूलतों और आसाइशों के ह़ुसूल में इतना गुम हो गया कि उस के पास **इल्मे दीन** सीखने का वक़्त ही नहीं। ऐसा भी देखा गया है कि सालहा साल से नमाज़ पढ़ने वाले को **वुज़ू** का सह़ीह़ त़रीक़ा तक नहीं आता, या वोह नमाज़ में ऐसी ग़-लत़ियों का आ़दी हो चुका होता है जिन से **नमाज़** टूट जाती है, किसी की **क़िराअत** दुरुस्त नहीं तो किसी का **सज्दा** ग़लत़ है ! कई कई **ह़ज** करने वाले को ह़ज के मसाइल मा'लूम नहीं होते ! बरसों से र-मज़ानुल मुबारक के **रोज़े** रखने वाले को येह नहीं पता होता कि शर-ई ए'तिबार से **स-ह़री** का वक़्त कब ख़त़्म होता है ? येह तो इबादात का ह़ाल है, जहां तक **मुआ़-मलात** म-सलन ख़रीदो फ़रोख़्त, निकाह़ व त़लाक़, उजरत दे कर कोई काम करवाने का तअ़ल्लुक़ है तो इल्मे दीन से महरूमी के बा वुजूद कोई भी काम करते वक़्त उ़मूमन उस की शर-ई ह़ैसिय्यत मा'लूम ही नहीं की जाती कि हम जो कुछ करने जा रहे हैं वोह जाइज़ है या ना जाइज़ ? **अ़क़ाइद** का मुआ़-मला सब से ज़ियादा नाज़ुक है कि हमारी अक्सरिय्यत तशवीश की ह़द तक अपने अ़क़ाइद की तफ़्सील से ला इल्म है जिस की वजह से ऐसे कलिमात भी बोल दिये जाते हैं जिन्हें उ़-लमाए किराम ने **कुफ़्र** क़रार दिया होता है।[1] अल ग़रज़ **जहालत** का एक त़ूफ़ान बरपा है, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, अमानत में ख़ियानत, वालिदैन की ना फ़रमानी, मुसल्मानों को बिला वज्हे शर-ई अज़िय्यत देना, बुग़्ज़ो कीना, **तकब्बुर**, ह़सद जैसे कितने ही ऐसे **मोहलिकात** हैं जिन के मसाइल का सीखना फ़र्ज़ है

मगर मुसल्मानों की बहुत बड़ी ता'दाद को इन की ता'रीफ़ात तक नहीं मा'लूम ! हम में से हर एक को चाहिये कि **इल्मे दीन** सीखने की ख़ुद भी कोशिश करें और दीगर मुसल्मानों को भी इस की तरग़ीब दें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ुसूले इल्म के ज़राएअ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन के ह़ुसूल के लिये मु-तअ़द्दिद ज़राएअ़ हैं म-सलन (1) किसी दारुल उ़लूम या जामिआ़ के शो'बए दर्से निज़ामी में **दाख़िला** ले कर बा क़ाइदा त़ौर पर इल्मे दीन ह़ासिल करना (2) उ़-लमाए किराम की **सोह़बत** में रह कर इल्म सीखना (3) दीनी कुतुब का **मुत़ा-लआ़** करना (4) उ़-लमाए किराम के **बयानात** सुनना, वग़ैरहा। हम इन में से जितने ज़ियादा ज़राएअ़ अपनाएंगे اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी क़दर हमारे इल्म में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा।

आ़लिम किसे कहते हैं ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" के सफ़ह़ा 58 पर है कि **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : "आ़लिम की येह ता'रीफ़ है कि अ़क़ाइद से पूरे त़ौर पर आगाह हो और मुस्तक़िल हो और अपनी ज़रूरिय्यात को किताब से निकाल सके बिग़ैर किसी की मदद के (मज़ीद फ़रमाते हैं कि) सिर्फ़ कुतुब बीनी (या'नी किताबें पढ़ना) काफ़ी नहीं बल्कि इल्म अफ़्वाहे रिजाल से (या'नी इल्म वालों से गुफ़्त-गू कर के) भी ह़ासिल होता है।"

क्या सनद याफ़्ता ही आ़लिम होता है ?

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं **''सनद कोई चीज़ नहीं,** बहुतेरे सनद याफ़्ता महूज़ बे बहरा (या'नी बे इ़ल्म) होते हैं और जिन्हों ने (बा क़ाइ़दा) सनद न ली **उन की शागिर्दी की लियाक़त** (या'नी सलाहिय्यत) **भी इन सनद याफ़्तों में नहीं होती, इ़ल्म होना चाहिये.....,''**

(فتاوٰی رضویہ ج۲۳ص۶۸۳)

मज़्कूरा बाला फ़रमान से मा'लूम हुवा कि बा क़ाइ़दा तौ़र पर किसी दारुल उ़लूम में दाख़िला ले कर **दर्से निज़ामी** (या'नी आ़लिम कोर्स) का कोर्स मुकम्मल कर के स-नदे फ़राग़त ह़ासिल करना आ़लिम होने के लिये **शर्त** नहीं।

नसीह़त के अनमोल मोती

मदारिस व जामिआ़त के सनद याफ़्तगान को भी सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नसीह़त के अनमोल मोती इ़नायत फ़रमाते हुए लिखते हैं : दूसरी मिसाल जाहिल मुफ़्ती (की) है कि लोगों को ग़लत़ फ़तवे दे कर ख़ुद भी गुमराह व गुनहगार होता है और दूसरों को भी करता है। **त़बीब** ही की त़रह़ आज कल मौलवी भी हो रहे हैं कि जो कुछ इस ज़माने में **मदारिस** में ता'लीम है वोह ज़ाहिर है ! अव्वल तो दर्से निज़ामी जो हिन्दूस्तान के मदारिस में उ़मूमन जारी है उस की तक्मील करने वाले भी बहुत क़लील अफ़राद होते हैं उ़मूमन कुछ मा'मूली तौ़र पर पढ़ कर **सनद** ह़ासिल कर लेते हैं और अगर पूरा दर्स भी पढ़ा तो इस पढ़ने का मक़्सद सिर्फ़ इतना है कि अब इतनी इस्ति'दाद हो गई कि किताबें देख कर मेह़नत कर के **इ़ल्म** ह़ासिल कर सकता है वरना दर्से निज़ामी में दीनियात की जितनी ता'लीम है ज़ाहिर कि इस के ज़रीए़ से कितने मसाइल पर उ़बूर हो सकता है मगर इन में अक्सर को इतना बेबाक पाया गया है कि अगर किसी ने इन से मस्अला दरयाफ़्त किया तो येह कहना ही नहीं जानते कि **मुझे मा'लूम नहीं या किताब देख कर बताऊंगा** कि इस में वोह अपनी तौहीन जानते हैं अटकल पच्चू जी में जो आया कह दिया। सह़ाबए किबार व अइम्मए आ'लाम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) की ज़िन्दगी की त़रफ़ नज़र की जाती है तो मा'लूम होता है कि बा वुजूद ज़बर दस्त पायए इज्तिहाद रखने के भी वोह कभी ऐसी **जुरअत** नहीं करते थे जो बात न मा'लूम होती उस की निस्बत साफ़ फ़रमा दिया करते कि **मुझे मा'लूम नहीं।** इन नौ आमोज़ मौलवियों को हम ख़ैर ख़्वाहाना **नसीह़त** करते हैं कि तक्मीले दर्से निज़ामी के बा'द फ़िक़्ह व उसूल व कलाम व ह़दीस व तफ़्सीर का ब कसरत **मुत़ा-लआ़** करें और दीन के मसाइल में जसारत न करें जो कुछ दीन की बातें इन पर मुन्कशिफ़ व वाज़ेह़ हो जाएं उन को बयान करें और जहां इश्काल पैदा हो उस में कामिल **ग़ौरो फ़िक्र** करें ख़ुद वाज़ेह़ न हो तो दूसरों की त़रफ़ **रुजूअ़** करें कि **इ़ल्म** की बात पूछने में कभी आ़र न करना चाहिये।[1] (بہارِ شریعت، حصہ۱۵، حجر کا بیان، ص۱۴۱ مکتبہ رضویہ)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सदरुश्शरीअ़ह पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन علیہم رحمۃُ اللّٰہِ المُبِین का शौक़े इ़ल्म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राहे इ़ल्म का सफ़र आसान नहीं मगर **शौक़** की सुवारी पास

हो तो दुश्वारियां मन्ज़िल तक पहुंचने में **रुकावट** नहीं बनतीं। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ المُبِيْن बड़े ज़ौक़ो शौक़ और लगन के साथ **इ़ल्मे दीन** ह़ासिल किया करते थे, बत़ौरे तरग़ीब चन्द ह़िकायात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

1 : इस मौज़ूअ़ पर मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये फ़तावा अहले सुन्नत ह़िस्सा 8 मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(1) ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शौक़े इ़ल्म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मदीनए मुनव्वरह زادھااللہ شرفاًوتعظیماً से मिस्र का सफ़र मह़ज़ इस लिये इख़्तियार किया कि ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक **ह़दीस** सुनें चुनान्चे येह वहां पहुंचे और ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस्तिक़्बाल किया तो फ़रमाने लगे : मैं एक ह़दीस के लिये आया हूं, जिस के सुनने में अब तुम्हारे सिवा कोई बाक़ी नहीं। ह़ज़रते उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़दीस सुनाई कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस किसी ने मोमिन की एक बुराई छुपाई, क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की पर्दा पोशी करेगा।" ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह **ह़दीस** सुनते ही अपने ऊंट की त़रफ़ बढ़े और एक लम्ह़ा ठहरे बिग़ैर मदीने वापस चले गए।

(المسندللامام احمد ، باب حدیث عقبہ بن عامر، الحدیث ۱۷۳۹۶،ج٦،ص١٣٧ دارالفکر بیروت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) इमाम मुस्लिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم का शौक़े इ़ल्म

एक दिन किसी इ़ल्मी मजलिस में ह़दीसे पाक की मशहूर किताब "मुस्लिम शरीफ़" के मुअल्लिफ़ इमाम मुस्लिम बिन ह़ज्जाज क़ुशैरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से किसी ह़दीस के बारे में इस्तिफ़्सार किया गया तो आप ने घर आ कर वोह **ह़दीस** तलाश करना शुरूअ़ कर दी। क़रीब ही **खजूरों** का टोकरा भी रखा हुवा था। आप ह़दीस की तलाश के दौरान एक एक खजूर उठा कर खाते रहे। दौराने मुत़ा-लआ़ इमाम मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के **इस्तिग़्राक़** और इन्हिमाक का येह आ़लम था कि खजूरों की मिक़्दार की जानिब आप की तवज्जोह न हो सकी और ह़दीस मिलने तक खजूरों का सारा **टोकरा** ख़ाली हो गया। ग़ैर इरादी त़ौर पर इतनी ज़ियादा **खजूरें** खा लेने की वजह से आप बीमार हो गए और इसी मरज़ में आप का **इन्तिक़ाल** हो गया।

(تہذیب التہذیب ،ج٨،ص١٥٠ مطبوعہ دارالفکر بیروت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) ह़ज़रते ज़ह़्ह़ाक علیہ رحمۃ اللہ الرزاق का शौक़े इ़ल्म

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का लक़ब "**नबील**" है, इस लक़ब की वजह येह हुई कि एक दिन इमाम इब्ने जुरैज رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की दर्सगाह में अह़ादीस की समाअ़त और किताबत कर रहे थे कि इतने में सड़क पर एक **हाथी** गुज़रा। तमाम त़-लबा दर्स छोड़ कर हाथी देखने चले गए मगर येह अपनी जगह पर बैठे

रहे इमाम इब्ने जुरैज رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने पूछा कि ज़ह्हाक तुम **हाथी** देखने क्यूं नहीं गए ! आप ने अ़र्ज़ किया : ''हुज़ूर ! हाथी आप की सोह़बत से बढ़ कर नहीं, **हाथी** तो फिर भी देख लेंगे मगर हुज़ूर का **ह़ल्क़ए दर्स** फिर कहां मिलेगा !'' येह जवाब सुन कर इमाम इब्ने जुरैज ने फ़रमाया कि (اَنۡتَ النَّبِیۡل) या'नी तुम नबील (बहुत शानदार) हो ।

(تهذیب التهذیب، ج٤ ص٧٩ دار الفکر بیروت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡمُجِیۡب का शौक़े इ़ल्म

ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस ''ह़ज्जाज बग़्दादी'' عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡھَادِی जब ह़ज़रते शबाबा मुह़द्दिस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के यहां **इ़ल्मे ह़दीस** पढ़ने के लिये जाने लगे तो उन की कुल पूंजी इतनी ही थी कि उन की ग़रीब मां ने एक सो ''**कुल्चे**'' पका दिये थे जिन को वोह एक मिट्टी के घड़े में भर कर अपने साथ ले गए **रोटियां** तो मां ने पका दी थीं होन्हार त़ालिबुल इ़ल्म ने **सालन** का ख़ुद इन्तिज़ाम कर लिया और सालन भी इतना कसीर व लत़ीफ़ कि सेंकड़ों बरस गुज़र जाने के बा वुजूद कम नहीं हुवा और हमेशा **ताज़ा** ही रहा और वोह क्या ! ! दरियाए दिजला का पानी, रोज़ाना येह एक कुल्चा दरिया के **पानी** में तर कर के खा लेते और शबाना रोज़ इन्तिहाई मेह़नत के साथ **सबक़** पढ़ते यहां तक कि जब **कुल्चे** ख़त्म हो गए तो मजबूरन उस्ताज़ की दर्सगाह को **ख़ैरबाद** कहना पड़ा ।''

(تاریخ بغداد، ج٨ص٢٣٥ دار الکتب العلمیه بیروت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) इमाम मुह़म्मद शैबानी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی का शौक़े इ़ल्म

इमाम मुह़म्मद शैबानी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡغَنِی हमेशा **शब बेदारी** फ़रमाया करते थे और आप के पास मुख़्तलिफ़ क़िस्म की किताबें रखी होती थीं जब एक फ़न से उक्ता जाते तो दूसरे फ़न के **मुत़ा-लए** में लग जाते थे । येह भी मन्क़ूल है कि आप अपने पास पानी रखा करते थे जब **नींद** का ग़-लबा होने लगता तो **पानी** के छींटे दे कर नींद को दूर फ़रमाते और फ़रमाया करते थे कि नींद गर्मी से है लिहाज़ा ठंडे पानी से दूर करो । (تعلیم المتعلم طریق التعلم، ١٠٠) आप को **मुत़ा-लए** का इतना शौक़ था कि रात के **तीन ह़िस्से** करते, एक ह़िस्से में इ़बादत, एक ह़िस्से में मुत़ा-लआ़ और बक़िय्या एक ह़िस्से में आराम फ़रमाते थे । आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : ''मुझे अपने वालिद की मीरास में से तीस हज़ार दिरहम मिले थे उन में से पन्दरह हज़ार मैं ने इ़ल्मे नह़्व, शे'र व अदब और लुग़त वग़ैरा की ता'लीम व तह़सील में ख़र्च किया और पन्दरह हज़ार ह़दीस व फ़िक़्ह की तक्मील पर ।''

(تاریخ بغداد، ج٢، ص١٧٠ دار الکتب العلمیه بیروت)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल ह़क़ देहलवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی का शौक़े इ़ल्म

मुह़क़्क़िक़े अ़लल इ़त्लाक़, ख़ातिमुल मुह़द्दिसीन, ह़ज़रते अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी**

عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی अपनी **कुतुब बीनी** का ह़ाल बताते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : "**मुत़ा-लआ़** करना मेरा शबो रोज़ का मश्ग़ला था। बचपन ही से मेरा येह ह़ाल था कि मैं नहीं जानता था कि खेलकूद क्या है ? आराम व आसाइश के क्या मआ़नी हैं ? सैर क्या होती है ? बारहा ऐसा हुवा कि **मुत़ा-लआ़** करते करते आधी रात हो गई तो वालिदे मोह़तरम समझाते : "बाबा ! क्या करते हो ?" येह सुनते ही मैं फ़ौरन लैट जाता और जवाब देता : "सोने लगा हूं।" फिर जब कुछ देर गुज़र जाती तो उठ बैठता और फिर से **मुत़ा-लए** में मसरूफ़ हो जाता। बसा अवक़ात यूं भी हुवा कि दौराने मुत़ा-लआ़ सर के बाल और इमामा वग़ैरा चराग़ से छू कर **झुलस** जाते लेकिन मुत़ा-लआ़ में मगन होने की वजह से पता न चलता।"

(اشعۃ اللمعات، جلد اوّل، مقدمہ، ص ۷۲، مطبوعہ فرید بک اسٹال لاہور)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربِّ العزت का शौक़े इल्म

आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के शौक़े मुत़ा-लआ़ और ज़हानत का बचपन ही में येह आ़लम था कि उस्ताज़ से कभी चौथाई किताब से ज़ियादा नहीं पढ़ी बल्कि चौथाई किताब उस्ताज़ से पढ़ने के बा'द बक़िय्या तमाम किताब का ख़ुद **मुत़ा-लआ़** करते और याद कर के सुना दिया करते थे। इसी त़रह़ दो जिल्दों पर मुश्तमिल **अल अ़क़ूदुद्दुरिय्यह** जैसी ज़ख़ीम किताब फ़क़त़ एक रात में **मुत़ा-लआ़** फ़रमा ली।

(حیاتِ اعلیٰ حضرت، ج ۱، ص ۷۰، ۲۱۳ مطبوعہ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) मुह़द्दिसे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَکْرَم का शौक़े इल्म

मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते मौलाना सरदार अह़मद क़ादिरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی को **मुत़ा-लए** का इतना शौक़ था कि मस्जिद में नमाज़े बा जमाअ़त में कुछ ताख़ीर होती तो किसी किताब का **मुत़ा-लआ़** करना शुरूअ़ कर देते। जब आप मन्ज़रे इस्लाम बरेली शरीफ़ में ज़ेरे ता'लीम थे तो साथी त़-लबा के सो जाने के बा'द भी मह़ल्ला सौदागरान में लगी **लालटेन** की रोशनी में अपना सबक़ याद किया करते थे। आप के असातिज़ा को इस बात का इल्म हुवा तो उन्हों ने आप के कमरे में लालटेन का बन्दो बस्त कर दिया।

(سیرتِ صدر الشریعہ، ص ۲۰۱، مطبوعہ مکتبۂ اعلیٰ حضرت لاہور)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह चन्द ह़िकायात ह़ुसूले ब-र-कत के लिये पेश की गई हैं, ह़क़ीक़त येह है कि हमारे **अकाबिरीन** علیہم رحمۃ اللہ المُبِین वक़्त की दौलत को सामाने आख़िरत बिल ख़ुसूस **इल्मे दीन** के अनमोल हीरों की ख़रीदारी में सर्फ़ किया करते थे।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का शौक़े इल्म

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ़ 52 स-फ़हात पर मुश्तमिल रिसाले, **''तज़्किरए सदरुश्शरीअ़ह''** के सफ़हा 2 पर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : **तब्लीगे़** कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** के क़ियाम से बहुत पहले मेरे अ़हदे तुफ़ूलिय्यत (या'नी बचपन या लड़क पन) का वाक़िआ़ है। जब हम बाबुल मदीना के अन्दर गउ गली, ओल्ड टाउन में रिहाइश पज़ीर थे, मह़ल्ले में बादामी मस्जिद थी जो कि काफ़ी आबाद थी, पेश इमाम साह़िब बहुत प्यारे आ़लिम थे, रोज़ाना नमाज़े इ़शा के बा'द नमाज़ के दो एक मसाइल बयान फ़रमाया करते थे (काश ! हर इमामे मस्जिद रोज़ाना कम अज़ कम किसी एक नमाज़ के बा'द इसी त़रह़ किया करे) जिस से काफ़ी सीखने को मिलता था। एक दिन मैं अपने बड़े भाई जान (मर्ह़ूम) के साथ ग़ालिबन नमाज़े ज़ोहर इसी बादामी मस्जिद में अदा कर के बाहर निकला था, पेश इमाम साह़िब फ़ारिग़ हो कर मस्जिद के बाहर तशरीफ़ ला चुके थे। किसी ने कोई मस्अला पूछा होगा इस पर उन्हों ने किसी को हुक्म फ़रमाया : **बहारे शरीअ़त** ले आओ। चुनान्चे एक किताब उन के हाथों में दी गई उस पर जली हुरूफ़ से **बहारे शरीअ़त** लिखा था, सरे वरक़ पर सूरज की किरनों के मुशाबेह ख़ूब सूरत धारियां बनी हुई थीं, इमाम साह़िब ने वरक़ गर्दानी शुरूअ़ की, मुझे उस वक़्त ख़ास पढ़ना तो आता नहीं था। जगह जगह जली जली हुरूफ़ में लफ़्ज़े **मस्अला** लिखा था, चूंकि मसाइल सुन कर बहुत सुकून मिलता था इस लिये मेरे मुंह में पानी आ रहा था कि काश ! येह किताब मुझे ह़ासिल हो जाती ! लेकिन न मैं ने मज़्हबी किताबों की कोई दुकान देखी थी न ही येह शुऊ़र था कि येह किताब ख़रीदी भी जा सकती है, ख़ैर अगर मोल मिलती भी तो मैं कहां से ख़रीदता ! इतने पैसे किस के पास होते थे ! बहर ह़ाल **बहारे शरीअ़त** मुझे याद रह गई और आख़िरे कार वोह दिन भी आ ही गया कि **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मैं **बहारे शरीअ़त** ख़रीदने के क़ाबिल हो गया। उन दिनों मुकम्मल **बहारे शरीअ़त** (दो जिल्दों में) का हदिय्या पाकिस्तानी 32 रुपिया था जब कि बिग़ैर जिल्द की 28 रुपिया। चुनान्चे मैं ने मुकम्मल **बहारे शरीअ़त** (ग़ैर मुजल्लद) 28 रुपै में ख़रीदने की सआ़दत ह़ासिल की। उस वक़्त **बहारे शरीअ़त** के 17 ह़िस्से थे अलबत्ता अब 20 ह़िस्से हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने **बहारे शरीअ़त** से वोह फ़ुयूज़ो ब-रकात ह़ासिल किये कि बयान से बाहर हैं, मुझे इस किताब की ब-रकात से **मा'लूमात** का वोह अनमोल **ख़ज़ाना** हाथ आया कि मैं आज तक इस के गुन गाता हूं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इल्मे दीन कैसे ह़ासिल किया ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **ह़ुसूले इ़ल्म** के ज़राएअ़ में से **मुत़ा-ल-अ़ए कुतुब और सोह़बते उ़-लमा** के ज़रीए़ को इख़्तियार फ़रमाया। इस सिल्सिले में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने सब से ज़ियादा इस्तिफ़ादा मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي से किया और मुसल्सल 22 **साल** आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की **सोह़बते बा ब-र-कत** से मुस्तफ़ीज़ होते रहे ह़त्ता कि **मुफ़्ती वक़ारुद्दीन** क़ादिरी र-ज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को र-जबुल मुरज्जब सि. 1404 हि. ब मुत़ाबिक़ एप्रिल सि. 1984 ई. अपने घर समनआबाद गुलबर्ग टाउन बाबुल मदीना कराची में **अपनी ख़िलाफ़त व इजाज़त** से भी नवाज़ा।[1] मशहूर है कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मुफ़्ती वक़ारुद्दीन** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के दुन्या भर में **वाह़िद ख़लीफ़ा** हैं। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

1 : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को दुन्याए इस्लाम के और भी कई अकाबिर उ़-लमा व मशाइख़ دامت فیوضھم से **ख़िलाफ़त** ह़ासिल है म-सलन शारेह़े बुख़ारी, फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द **मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़** अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي ह़ज़रते मौलाना अ़ब्दुस्सलाम क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي और **जा नशीने सय्यिदी क़ुत्बे मदीना** ह़ज़रते मौलाना **फ़ज़्लुर्रह़मान** अशरफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي ने भी अपनी ख़िलाफ़त और ह़ासिल शुदा असानीद व इजाज़ात से नवाज़ा है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का किताब घर

अपने ज़ौक़े मुत़ा-लआ़ की तस्कीन और तह़रीरी काम के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **किताब घर** (या'नी कुतुब ख़ाना) भी बनाया। जिस की किताबों में रफ़्ता रफ़्ता इज़ाफ़ा होता गया और आज इल्मे क़ुरआनो ह़दीस, अ़क़ाइद, फ़िक़्ह और तसव्वुफ़ के दरजनों मौज़ूआ़त पर **सेंकड़ों** कुतुब व रसाइल आप के किताब घर की ज़ीनत हैं जिन में तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान मअ़ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़, बहारे शरीअ़त और एह़याउल उ़लूम सरे फ़ेहरिस्त हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का अन्दाज़े मुत़ा-लआ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अवराक़ पलटने, स-फ़ह़ात गिनने और उस में लिखी हुई सियाह लकीरों पर नज़र डाल कर गुज़र जाने का नाम **मुत़ा-लआ़** नहीं। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने किताबों को महज़ जम्अ़ नहीं किया बल्कि मुसल्सल मुत़ा-लआ़, ग़ौरो फ़िक्र और अ़-मली **कोशिशें** आप के किरदारे अ़ज़ीम का ह़िस्सा हैं। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه किस त़रह़ मुत़ा-लआ़ फ़रमाते हैं इस का अन्दाज़ा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **मुत़ा-लआ़ के म-दनी फूलों** से किया जा सकता है :

ह़दीसे पाक : ''اَلْعِلْمُ اَفْضَلٌ مِّنَ الْعِبَادَةِ'' के अड्डारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से दीनी मुत़ा-लआ़ करने के 18 म-दनी फूल

(अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **)**

(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और ह़ुसूले सवाब की निय्यत से मुत़ा-लआ़ कीजिये।

(2) मुत़ा-लआ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल ह़म्दो सलात पढ़ने की आ़दत बनाइये, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस नेक काम से क़ब्ल **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द और मुझ पर दुरूद न पढ़ा गया उस में ब-र-कत नहीं होती। (کنزالعمال ج۱،ص۲۷۹،حدیث ۲۵۰۷) वरना कम अज़ कम बिस्मिल्लाह शरीफ़ तो पढ़ ही लीजिये कि हर साह़िबे शान काम करने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़नी चाहिये।[1] (ایضًا،ص۲۷۷ حدیث ۲۴۸۷)

(3) दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले, **''जिन्नात का बादशाह''** के सफ़ह़ा 23 पर है : क़िब्ला रू बैठिये कि इस की ब-र-कतें बे शुमार हैं चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बुरहानुद्दीन इब्राहीम ज़रनौजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : दो त़-लबा इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये परदेस गए, दो साल तक दोनों हम सबक़ रहे, जब वत़न लौटे तो उन में एक **फ़क़ीह** (या'नी ज़बर दस्त आ़लिम) बन चुके थे जब कि दूसरा इल्मो कमाल से **ख़ाली** ही रहा था। उस शहर के उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस अम्र पर ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ किया, दोनों के ह़ुसूले इल्म के त़रीक़ए कार, अन्दाज़े तक्रार और बैठने के अत़वार वग़ैरा के बारे में तह़क़ीक़ की तो एक बात जो कि नुमायां त़ौर पर सामने आई वोह येह थी कि जो **फ़क़ीह** बन के पलटे थे उन का मा'मूल येह था कि वोह सबक़ याद करते वक़्त **क़िब्ला रू** बैठा करते थे जब कि दूसरा जो कि कोरे का कोरा पलटा था वोह क़िब्ला की त़रफ़ पीठ कर के बैठने का आ़दी था, चुनान्चे तमाम उ़-लमा व फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इस बात पर मुत्तफ़िक़ हुए कि **येह ख़ुश नसीब इस्तिक़्बाले क़िब्ला** (या'नी क़िब्ला की त़रफ़ रुख़ करने) **के एहतिमाम की ब-र-कत से फ़क़ीह बने क्यूं कि बैठते वक़्त का 'बतुल्लाह शरीफ़ की सम्त मुंह रखना सुन्नत है।**

(تعلیم المتعلم طریق التعلم ص ۶۷)

1 : इस रिसाले के शुरूअ़ में दी हुई ह़म्दो सलात पढ़ ली जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दोनों ह़दीसों पर अ़मल हो जाएगा।

(4) सुब्ह़ के वक़्त मुत़ा–लआ़ करना बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि उ़मूमन इस वक़्त नींद का ग़–लबा नहीं होता और ज़ेह्न ज़ियादा काम करता है ।

(5) शोरो ग़ुल से दूर पुर सुकून जगह पर बैठ कर मुत़ा–लआ़ कीजिये ।

(6) अगर जल्द बाज़ी या टेन्शन (या'नी परेशानी) की ह़ालत में पढ़ेंगे म–सलन कोई आप को पुकार रहा है और आप पढ़े जा रहे हैं, या इस्तिन्जा की ह़ाजत है और आप मुसल्सल मुत़ा–लआ़ किये जा रहे हैं, ऐसे वक़्त में आप का ज़ेह्न काम नहीं करेगा और ग़लत़ फ़ह्मी का इम्कान बढ़ जाएगा ।

(7) किसी भी ऐसे अन्दाज़ पर जिस से आंखों पर ज़ोर पड़े म–सलन बहुत मध्धम **या** ज़ियादा तेज़ रोशनी में **या** चलते चलते **या** चलती गाड़ी में **या** लैटे लैटे **या** किताब पर झुक कर मुत़ा–लआ़ करना आंखों के लिये मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) है ।

(8) कोशिश कीजिये कि रोशनी ऊपर की जानिब से आ रही हो, पिछली त़रफ़ से आने में भी ह़रज नहीं मगर सामने से आना आंखों के लिये नुक़्सान देह है ।

(9) मुत़ा–लआ़ करते वक़्त ज़ेह्न ह़ाज़िर और त़बीअ़त तरो ताज़ा होनी चाहिये ।

(10) वक़्ते मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन क़लम हाथ में रखना चाहिये कि जहां आप को कोई बात पसन्द आए या कोई ऐसा जुम्ला या मस्अला जिस की आप को बा'द में ज़रूरत पड़ सकती हो, ज़ाती किताब होने की सूरत में उसे अन्डर लाइन कर सकें ।

(11) किताब के शुरूअ़ में उ़मूमन दो एक ख़ाली काग़ज़ होते हैं, उस पर **याद दाश्त** लिखते रहिये या'नी इशारतन चन्द अल्फ़ाज़ लिख कर उस के सामने सफ़्ह़ा नम्बर लिख लीजिये । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ अक्सर किताबों के शुरूअ़ में याद दाश्त के स–फ़ह़ात लगाए जाते हैं ।

(12) मुश्किल अल्फ़ाज़ पर भी निशानात लगा लीजिये और किसी जानने वाले से दरयाफ़्त कर लीजिये ।

(13) सिर्फ़ आंखों से नहीं ज़बान से भी पढ़िये कि इस त़रह़ याद रखना ज़ियादा आसान है ।

(14) थोड़ी थोड़ी देर बा'द आंखों और गरदन की वरज़िश कर लीजिये क्यूं कि काफ़ी देर तक मुसल्सल एक ही जगह देखते रहने से आंखें थक जातीं और बा'ज़ अवक़ात गरदन भी दुख जाती है । इस का त़रीक़ा येह है कि आंखों को दाएं बाएं, ऊपर नीचे घुमाइये । इसी त़रह़ गरदन को भी आहिस्ता आहिस्ता ह़–र–कत दीजिये ।

(15) इसी त़रह़ कुछ देर मुत़ा–लआ़ मौक़ूफ़ कर के दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ कर दीजिये और जब आंखों वग़ैरा को कुछ आराम मिल जाए तो फिर मुत़ा–लआ़ शुरूअ़ कर दीजिये ।

(16) एक बार के मुत़ा–लआ़ से सारा मज़्मून याद रह जाना बहुत दुश्वार है कि फ़ी ज़माना हाज़िमे भी कमज़ोर और ह़ाफ़िज़े भी कमज़ोर ! लिहाज़ा दीनी कुतुब व रसाइल का बार बार मुत़ा–लआ़ कीजिये ।

(17) मक़ूला है: اَلسَّبَقُ حَرْفٌ وَ التَّکْرَارُ اَلْفٌ या'नी सबक़ एक ह़र्फ़ हो और तक्रार (या'नी दोहराई) एक हज़ार बार होनी चाहिये।

(18) जो भलाई की बातें पढ़ी हैं सवाब की निय्यत से दूसरों को बताते रहिये, इस त़रह़ اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को याद हो जाएंगी ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शौक़े मुत़ा–लआ़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के शौक़े मुत़ा–लआ़ का येह आ़लम है कि आप इस क़दर मुन्हमिक हो कर **मुत़ा–लआ़** फ़रमाते हैं कि बारहा ऐसा हुवा कि किताब घर के इस्लामी भाइयों में से कोई इस्लामी भाई किसी मस्अले के

ह़ल के लिये आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए लेकिन **मुत़ा-लए** में मसरूफ़ होने की बिना पर आप को उस की आमद की ख़बर न हुई और कुछ देर बा'द इत्तिफ़ाक़न निगाह उठाई तो उस इस्लामी भाई ने अपना मस्अला अ़र्ज़ किया । आप न सिर्फ़ ख़ुद **मुत़ा-लए** का शौक़ रखते हैं बल्कि अपने **मुरीदीन** व **मु-तवस्सिलीन** और **मुह़िब्बीन** को भी दीनी कुतुब बिल ख़ुसूस फ़तावा र-ज़विय्या, बहारे शरीअ़त, तम्हीदुल ईमान, मिन्हाजुल आ़बिदीन और एह़याउल उ़लूम वग़ैरा के **मुत़ा-लआ़** की तरग़ीब दिलाते रहते हैं ।

म-दनी इन्आ़मात और मुत़ा-लआ़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ित्तन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनाम "**म-दनी इन्आ़मात**" ब सूरते सुवालात मुरत्तब किया है । इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83, म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये 40 जब कि ख़ुसूसी इस्लामी भाइयो (या'नी गूंगे बहरों) के लिये 27
म-दनी इन्आ़मात हैं । बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़-लबा **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल "**फ़िक्रे मदीना करते हुए**" या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर **म-दनी इन्आ़मात** के जेबी साइज़ के रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं । इन म-दनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से अक्सर दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन भी बनता है । इन म-दनी इन्आ़मात में भी आप ने मुत़ा-लआ़ के ह़वाले से कई सुवालात तह़रीर फ़रमाए हैं, म-सलन इस्लामी भाइयों के लिये 72 म-दनी इन्आ़मात में येह सुवाल भी शामिल हैं :
(14) क्या आज आप ने 12 मिनट किसी सुन्नी आ़लिम की **इस्लामी किताब** और **फ़ैज़ाने सुन्नत** के तरतीब वार कम अज़ कम **चार स-फ़ह़ात** (दर्स के इ़लावा) पढ़ या सुन लिये ?
(68) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक बार **इमाम ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي की आख़िरी तस्नीफ़ **मिन्हाजुल आ़बिदीन** से तौबा, इख़्लास, तक़्वा, ख़ौफ़ व रजा, उज्ब व रिया, आंख, कान, ज़बान, दिल और पेट की ह़िफ़ाज़त का बयान पढ़ या सुन लिया ?
(69) क्या आप ने इस साल कम अज़ कम एक मर्तबा बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 9 से मुरतद का बयान, ह़िस्सा 2 से नजासतों का बयान और कपड़े पाक करने का त़रीक़ा, ह़िस्सा 16 से ख़रीदो फ़रोख़्त का बयान, वालिदैन के ह़ुक़ूक़ का बयान (अगर शादी शुदा हैं तो) ह़िस्सा 7 से मुह़र्रमात का बयान और ह़ुक़ूक़ुज़्ज़ौजैन, ह़िस्सा 8 से बच्चों की परवरिश का बयान, त़लाक़ का बयान, ज़िहार का बयान और त़लाक़े किनाया का बयान पढ़ या सुन लिया ?
(71) क्या आप ने **आ'ला ह़ज़रत** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की कुतुब **तम्हीदुल ईमान** और **ह़ुस्सामुल ह़-रमैन** नीज़ **निसाबे शरीअ़त** पढ़ या सुन ली हैं ?
(72) क्या आप ने **बहारे शरीअ़त** या **रसाइले अ़त्तारिय्या** ह़िस्सए अव्वल से पढ़ या सुन कर अपने **वुज़ू, ग़ुसुल** और **नमाज़ दुरुस्त** कर के किसी सुन्नी आ़लिम या ज़िम्मादार मुबल्लिग़ को सुना दिये हैं ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को देखा गया है कि आप न सिर्फ़ वक़्ते मुत़ा-लआ़ बल्कि दीगर अवक़ात में भी दीनी कुतुब का बहुत ज़ियादा **अ-दबो** एह़तिराम करते हैं, ऐसी ही तीन ह़िकायात मुला-ह़ज़ा कीजिये :

''अदब'' के तीन हुरूफ़ की निस्बत से 3 ह़िकायात

(1) दीनी किताब का अदब

ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का बयान है कि 8 **शव्वालुल मुकर्रम सि.** 1427 **हि.,** यकुम अक्तूबर **सि.** 2006 **ई.** बरोज़ बुध इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल की अदाएगी के बा'द **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की नज़र एक दीनी किताब पर पड़ी जिस पर किसी ने ''**वाइटो**'' (whito, लफ़्ज़ मिटाने वाला क़लम) रख दिया था। आप ने बढ़ कर **वाइटो** उस किताब पर से हटाते हुए इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया : ''दीनी किताब पर किसी शै का रखना **अदब** के ख़िलाफ़ है, इस का ख़याल रखना सआ़दत मन्दी है, वरना जो इस त़रफ़ तवज्जोह नहीं देता है उस की बे एह़तियातियां बढ़ जाती हैं।'' फिर फ़रमाने लगे : ''दा'वते इस्लामी के क़ियाम से पहले की बात है, कमो बेश 27 साल क़ब्ल मैं एक साह़िब से मुलाक़ात के लिये पहुंचा, दौराने गुफ़्त-गू उन्हों ने हाथ में ली हुई अह़ादीसे मुबा-रका की मशहूर किताब मिश्कात शरीफ़ को इस त़रह़ ऊपर से मेज़ पर डाला कि अच्छी ख़ासी ''**धमक**'' पैदा हुई। मुझे इस बात का इस क़दर सदमा हुवा कि आज काफ़ी अ़र्सा गुज़र जाने के बा वुजूद भी जब वोह वाक़िआ़ याद आता है तो उस ''**धमक**'' का सदमा महसूस होता है।'' इस से **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दीनी कुतुब से महब्बत और अदब व एह़तिराम का अन्दाज़ा होता है।

कपड़ा हटा दिया

एक इस्लामी भाई ने बताया कि **सि.** 1420 **हि.** में **मुझे** ''**चल मदीना**'' या'नी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराह ह़ज की सआ़दत ह़ासिल हुई। एक रोज़ मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में जहां हमारा क़ियाम था बा'द इशराक़ व चाश्त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अचानक उठे और सामने रखी एक **दीनी किताब** जिस पर बराबर रखी चादर का कोना ढलक आया था उसे हटाया और किताब उठा कर आंखों से लगाई, सर पर रखी और चूम कर अदब से उसी जगह वापस रख दी। शु-रकाए क़ाफ़िला **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अदब व अ़-मली तरग़ीब के इस दिल नशीन अन्दाज़ से बेह़द मु-तअस्सिर हुए और निय्यत की आइन्दा हम भी दीनी किताबों के आदाब का ख़याल रखेंगे।

(3) अदब का अनोखा तक़ाज़ा

एक इस्लामी भाई का बयान है कि 4 **शव्वालुल मुकर्रम सि.** 1427 **हि.,** नवम्बर **सि.** 2006 **ई.** बरोज़ हफ़्ता मैं **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के आस्ताने पर बैठा कुछ लिख रहा था, ज़रूरत के तह़्त उठा तो इस निय्यत के साथ तह़रीरी स-फ़ह़ात पर कुफ़्ले मदीना ऐनक और ''**दो क़लम**'' रख दिये कि स-फ़ह़ात न उड़ें। इतने में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तशरीफ़ ले आए, आप ने जब तह़रीरी स-फ़ह़ात पर कुफ़्ले मदीना ऐनक और ''**दो क़लम**'' रखे देखे तो स-फ़ह़ात पर से दोनों **क़लम** हटाते हुए फ़रमाने लगे अगर आप ने येह इस निय्यत से रखे कि स-फ़ह़ात न उड़ें तो **एक ऐनक ही काफ़ी है,** दोनों **क़लम** बिग़ैर ज़रूरत महसूस हो रहे हैं लिहाज़ा अदब का तक़ाज़ा येह ही है कि **क़लम** हटा दिये जाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दीनी मसाइल पर अमीरे अहले सुन्नत का उ़बूर

शौक़े मुत़ा-लआ़, ग़ौरो तफ़क्कुर और जय्यिद

उ-लमाए किराम से तह़क़ीक़ व तदक़ीक़ की वजह से **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को **मसाइले शरइय्या** की काफ़ी मा'लूमात हैं। आप की तह़रीर कर्दा **कुतुब** म-सलन "फ़ैज़ाने सुन्नत", "नमाज़ के अह़काम", "इस्लामी बहनों की नमाज़", "चन्दे के बारे में सुवाल जवाब", "रफ़ीक़ुल ह़-रमैन", "रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन" नीज़ कुफ़्रिय्या कलिमात और पर्दा वग़ैरा के मौज़ूआ़त पर आप की तालीफ़ात, तफ़क़्क़ुहि फ़िद्दीन में आप के आ'ला मक़ाम का पता देती हैं। ख़लीफ़ए मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान, **ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अश्फ़ाक़ साह़िब** مدظله العالی लिखते हैं : आप (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) ने अगर्चे फ़ारिग़ुत्तह़सील होने की ह़द तक किसी मद्रसे में बा क़ाइ़दा ता'लीम ह़ासिल नहीं की, मगर ज़िम्मादारी का कमाले एह़सास फ़रमाते हुए कस्रते मुत़ा-लआ़, बह़स व तम्ह़ीस और अकाबिर उ-लमाए किराम से तह़क़ीक़ व तदक़ीक़ के ज़रीए़ से मसाइले शरइय्या पर उ़बूर ह़ासिल कर लिया है। इमामे अहले सुन्नत **आ'ला ह़ज़रत** علیه الرحمة की कुतुब का मुत़ा-लआ़, आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल ब-र-कत के इ़ल्मी फ़ैज़ान का ज़रीआ़ है। इन के मस्लक पर तसल्लुब (या'नी मज़बूत़ी), शरीअ़ते मुत़ह्हरा की पाबन्दी, रूह़ानी उ़रूज का सबब है। ह़ज व उ़म्रह के मसाइल पर आप की तह़रीर कर्दा किताब "**रफ़ीक़ुल ह़-रमैन**" व "**रफ़ीक़ुल मो'तमिरीन**" फ़िक़्ह में आप की तह़क़ीक़ व तदक़ीक़ की ग़म्माज़ हैं, इस्लाह़ व तरबिय्यत के लिये क़ौले ह़सन और मिसाली सलाह़िय्यत पर "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" शाहिदे अ़द्ल है, इ़ल्मे दीन से ग़ायत द-रजा का शग़फ़, बा अ़मल उ-लमाए किराम के एह़तिराम और मदारिसे दीनिया से लगाव का मूजिब है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की वुस्अ़ते इ़ल्मी

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की वुस्अ़ते इ़ल्मी देखनी हो तो सुवालात व जवाबात के वोह इज्तिमाआ़त सुन और देख लीजिये जो वक़्तन फ़ वक़्तन मुन्अ़क़िद होते रहते हैं जिन्हें "**म-दनी मुज़ाकरात**" का नाम दिया गया है। इन में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त म-सलन **अ़क़ाइदो आ'माल, शरीअ़त व त़रीक़त, फ़िक़्ह व त़िब, तारीख़ व आसार, अवरादो वज़ाइफ़, घरेलू व मुआ़-श-रती मसाइल** नीज़ **तन्ज़ीमी मुश्किलात** से मु-तअ़ल्लिक़ पूछे गए सेंकड़ों सुवालात के जवाबात इर्शाद फ़रमा चुके हैं। येह म-दनी मुज़ाकरे मक-त-बतुल मदीना के ज़रीए़ **केसिट व रसाइल** और **सीडीज़** की सूरत में मन्ज़रे आ़म पर आते रहते हैं। इ़ल्म का समुन्दर होने के बा वुजूद आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه आग़ाज़ में शु-रकाए म-दनी मुज़ाकरा से कुछ इस त़रह़ आ़जिज़ी भरे **अल्फ़ाज़** इर्शाद फ़रमाते हैं : "आप सुवालात कीजिये, याद रहे कि हर सुवाल का जवाब वोह भी बिस्सवाब (या'नी दुरुस्त) दे पाऊं, ज़रूरी नहीं, मा'लूम हुवा तो अ़र्ज़ करने की कोशिश करूंगा। अगर मुझे भूल करता पाएं तो फ़ौरन मेरी इस्लाह़ फ़रमा दीजिये, मुझे अपने मौक़िफ़ पर बे जा अड़ता हुवा नहीं اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ शुक्रिया के साथ रुजूअ़ करता हुवा पाएंगे।"

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मसाइले तसव्वुफ़

मसाइले तसव्वुफ़ व अख़्लाक़ में भी आप मज़बूत़ गरिफ़्त रखते हैं। तसव्वुफ़ की कुतुब अक्सर आप के ज़ेरे

मुत़ा-लआ़ रहती हैं और दीगर इस्लामी भाइयों को भी पढ़ने की तल्क़ीन फ़रमाते रहते हैं। **मुन्जियात** म-सलन सब्र, शुक्र, तवक्कुल, क़नाअ़त और ख़ौफ़ व रजा वग़ैरा की ता'रीफ़ात वग़ैरा और **मोहलिकात** म-सलन झूट, ग़ीबत, बुग़्ज़, कीना और ग़फ़्लत वग़ैरा के **अस्बाब व इलाज** आसान व सह्ल त़रीक़े से बयान करना आप का इम्तियाज़ी

वस्फ़ है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की इल्मी गुफ़्त–गू

उ़मूमन आप की गुफ़्त–गू बिल्कुल सादा आ़म फ़ह्‌म और वाज़ेह़ होती है कि हर सुनने वाला समझ लेता है लेकिन कभी कभार "**كَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰى قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ** (या'नी लोगों से उन की अ़क़्लों के मुताबिक़ कलाम करो)" के तह़्‌त मजलिसे
उ़–लमा में ख़ालिस इल्मी व फ़िक़्ही अन्दाज़ में भी गुफ़्त–गू फ़रमाते हैं। **एक** आ़लिम साह़िब का बयान है कि क़िब्ला **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते हुए जब मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) तशरीफ़ लाए तो आप ने अहले सुन्नत की मशहूर दर्सगाह **जामिअ़ा निज़ामिया**
र–ज़विय्या में भी क़दम रन्जा फ़रमाया। उस वक़्त मैं दौरए ह़दीस शरीफ़ का त़ालिबुल इल्म था। जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हमारे द–रजे में आए तो उस वक़्त मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान **मुफ़्ती अ़ब्दुल क़य्यूम हज़ारवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی दर्से ह़दीस दे रहे थे। मुफ़्ती साह़िब ने इतनी शफ़्क़त का मुज़ा–हरा किया कि खड़े हो कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का इस्तिक़्बाल किया, आप को अपने हमराह अपनी मस्नद पर बिठाया और त़–लबा को नसीह़त करने का फ़रमाया। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मुख़्तसर वक़्त में ऐसा **इल्मी, अ–दबी और फ़िक़्ही बयान** फ़रमाया कि न सिर्फ़ त़–लबा बल्कि ख़ुद मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बेह़द मु–तअस्सिर हुए और गाहे ब गाहे **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का ज़िक्रे ख़ैर फ़रमाते रहते।

मसाइल पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की गहरी नज़र

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुबीन नो'मानी क़ादिरी مدظلہ العالی (चरय्या कोट ज़िल्अ़ मऊ हिन्द) ने अपने एक इन्टरव्यू में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के बारे में अपने तअस्सुरात का इज़्हार इन अल्फ़ाज़ में किया : "**बहुत से दर्से निज़ामी की तक्मील करने और सनद ह़ासिल करने वालों से इन** (या'नी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ) **का इल्म बढ़ा हुवा है। इन का मुत़ा–लअ़ा बड़ा वसीअ़ है, मसाइल पर भी बड़ी गहरी नज़र रखते हैं।** उ़–लमाए किराम से बराबर इस्तिस्वाब भी करते रहते हैं। जो सुन्नत इन्हें मा'लूम हो जाती है और शरीअ़त का जो भी मस्अला इन के इ़ल्म में आ जाता है उन पर वोह सख़्ती से **अ़मल** करते हैं और अपने मु–तअ़ल्लिक़ीन को भी अ़मल की तल्क़ीन करते हैं। मौलाना **मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी** (دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ) अपने इ़ल्मो अ़मल, तक़्वा और जिद्दो जहद की बुन्याद पर **आ़लमी** पैमाने का दीनी काम कर रहे हैं।"

(ماہنامہ جام نور، اکتوبر ۲۰۰۴، ص ۳۷)

आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت की तसानीफ़ का मुत़ा–लअ़ा

मा'रूफ़ आ़लिमे दीन **मुफ़्ती मुह़म्मद इब्राहीम क़ादिरी** مدظلہ العالی (शैख़ुल ह़दीस दारुल उ़लूम ग़ौसिया र–ज़विय्या सख्खर) लिखते हैं : "आप मसाइले दीनिया में **नज़रे अ़मीक़** रखते हैं और इस की वजह येह है कि इन्हों ने आ'ला ह़ज़रत قدس سرہ العزیز की तसानीफ़ का जो उ़लूम व मआ़रिफ़ का ख़ज़ीना और फ़िक़्ह की वादी में क़दम रखने वालों के लिये ख़िज़्रे राह का काम देती है गहरी नज़र से **मुत़ा–लअ़ा** किया है।"

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आ़लिमे निय्यत

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा र–ज़विय्या

शरीफ़ जिल्द 5 सफ़ह़ा 673 पर मस्जिद में जाने की "40 **निय्यतें**" बयान फ़रमाने से क़ब्ल येह ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाई कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "**मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है**" (المعجم الكبير للطبرانی، الحدیث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥) फिर लिखा : और बेशक जो **इल्मे निय्यत** जानता है (या'नी आ़लिमे निय्यत हो) एक एक फ़े'ल में अपने लिये कई कई नेकियां कर सकता है। म-सलन जब नमाज़ के लिये मस्जिद को चला और सिर्फ़ येह ही क़स्द है कि नमाज़ पढ़ूंगा तो बेशक इस का चलना महमूद, हर क़दम पर एक नेकी लिखेंगे और दूसरे पर गुनाह महूव करेंगे। मगर "**आ़लिमे निय्यत**" इस एक ही फ़े'ल में इतनी (या'नी 40) निय्यतें कर सकता है।

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्मे निय्यत में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की महारत का आ़लम येह है कि "फ़ैज़ाने निय्यत" के नाम से एक किताब लिखने का आग़ाज़ फ़रमा दिया है, जब कि फ़ी ज़माना इस जानिब किसी और की तवज्जोह नज़र नहीं आती।[1] क़िब्ला शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुरत्तब कर्दा निय्यतों के मुत़ा-लए से आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़बर दस्त इल्मी महारत का अन्दाज़ा होने के साथ आप की म-दनी सोच से भी आगाही होगी और आप के रोज़ मर्रा मा'मूलात में सुन्नतों का एहतिमाम, नेकियों से उल्फ़त और तक़्वा व परहेज़ गारी से महकती महकाती एह़तियातें **सलफ़ सालिह़ीन** की याद दिलाएगी।

अमीरे अहले सुन्नत की मुरत्तब कर्दा निय्यतों की फ़ेहरिस्त

(1) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की 72 निय्यतें
(2) ख़ुश्बू लगाने की 47 निय्यतें
(3) खाना खाने की 40 निय्यतें
(4) पानी पीने की 15 निय्यतें
(5) चाय पीने की 6 निय्यतें
(6) ए'तिकाफ़ की 72 निय्यतें
(7) घर से निकलते वक़्त की 63 निय्यतें
(8) जश्ने विलादत मनाने की 18 निय्यतें
(9) त़ालिबे इल्म के पढ़ने की 53 निय्यतें
(10) उस्ताज़ के पढ़ाने की 53 निय्यतें
(11) निकाह़ की 9 निय्यतें
(12) औलाद को नेक बनाने के बारे में 19 निय्यतें
(13) इस्तिन्जा ख़ाने में जाने की 42 निय्यतें
(14) अपने पास फ़ोन रखने की 30 निय्यतें
(15) फ़ोन मिलाने या वुसूल करने की 13 निय्यतें

1 : एक इस्लामी भाई ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सामने इस किताब का तज़्किरा किया तो फ़रमाया "फ़ैज़ाने निय्यत" लिखने की ब ज़ाहिर सूरत मुश्किल नज़र आती है, अधूरा काम काफ़ी रखा हुवा है और उ़म्र का पैमाना लबरेज़ होता नज़र आ रहा है।" अल्लाह तआ़ला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इल्मो अ़मल और उ़म्र में ब-र-कतें दे और उन्हें येह किताब जल्द मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

इन के इलावा मुख़्तलिफ़ कुतुब व रसाइल पढ़ने की अलग अलग निय्यतें भी आप ने मुरत्तब फ़रमाई हैं जो इन कुतुब व रसाइल (मत्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) के शुरूअ़ में देखी जा सकती हैं म-सलन फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल), घरेलू इलाज, म-दनी पन्ज सूरह, बहारे शरीअ़त, मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیہ वग़ैरहा।
(अच्छी अच्छी **निय्यतों** से मु-तअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ का मुन्फ़रिद सुन्नतों भरा बयान "**निय्यत का फल**" और निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ मुरत्तब कर्दा दीगर कार्ड या पेम्फ़लेट **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से त़लब फ़रमाइये।)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तरग़ीब का म-दनी अन्दाज़

एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई का कहना है कि मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की बारगाह में ह़ाज़िर था। आप ने चाय पीने के बा'द कप में पानी डाल कर हिलाया और उस पानी को कुछ देर मुंह में रखने के बा'द निगल लिया और ख़ाली कप को दीवार के साथ रख कर फ़रमाया मैं ने (चाय पीने की 6 निय्यतों के इलावा) "**मज़ीद 3 निय्यतें**" की हैं, एक येह कि न जाने रिज़्क़ के किस ज़र्रे में **ब-र-कत** हो इस के हुसूल की निय्यत से कप में पानी डाल कर पी लिया फिर पानी मुंह में कुछ देर इस लिये रखा ताकि दांतों से चाय का असर निकल जाए, जरासीम की अफ़्ज़ाइश न हो और सिह़्ह़त क़ाइम रहे ताकि **दीन की ख़िदमत** हो सके। कप दीवार के क़रीब रखने में निय्यत येह थी कि किसी मुसल्मान को **ठोकर** न लगे। फिर ज़रूरतन उठना हुवा तो आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने कप उठाया और बावर्ची ख़ाने की त़रफ़ बढ़ते हुए फ़रमाया, **दो निय्यतें और की हैं,** एक येह कि कोई और इस्लामी भाई येह कप उठा कर रखेगा उस को **मशक़्क़त** से बचाने की निय्यत और दूसरा आप को **तरग़ीब** मिले। (سُبۡحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुआ़ : या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **!** हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की पैरवी में ख़ुशी व ग़म में अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाता है। इसी तरह तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर आशिक़ाने रसूल की सोहबत में रहने वाला **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महरबानी से बे वक़्अत पत्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जगमगाता और अैसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और जीने के बजाए अैसी मौत की आरज़ू करने लगता है। फैजाने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पाने के लीये आप भी तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिरकत और **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैखे़ तरीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ोर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की केसेट सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, जि़न्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इमामा वगै़रा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को हैरत अंगेज़ तौर पर **सिह्हत** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए तय्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी हालत में **रूह क़ब्ज़** हुई, मर्हूम को अच्छी हालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वगै़रा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ोर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़हे पर वाक़िआ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एहसान फ़रमाइये **म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने अहमद आबाद गुजरात''**

''शो'बए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या**

नाम मअ़ वल्दिय्यत :...................................... उ़म्र............. किन से मुरीद या तालिब है .... ख़त मिलने का पता.. फ़ोन नम्बर (बमअ़ कोड) : ....ई मेइल अेड्रेस .... इन्क़िलाबी केसेट या रिसाले का नाम :.............................. सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/ साल :............... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :................ मौजूदा तन्ज़ीमी जि़म्मादारी.................. मुन्दरिजए बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें हासिल हुईं, फ़ुलां फ़ुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती डकैती वगै़रा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के **''ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़त''** मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़हे पर **तफ़्सीलन तहरीर फ़रमा दीजिये।**

म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोहबत में रह कर गुलाबी हो जाता है। इसी त़रह़ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो कर आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रहने वाला **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महरबानी से बे वक़्अ़त पत्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जगमगाता और ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और जीने के बजाए ऐसी मौत की आरज़ू करने लगता है। फैजाने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पाने के लीये आप भी तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिरकत और **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ॉर्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की केसेट सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माहोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इमामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर **सिह़्ह़त** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्ह़ूम को अच्छी ह़ालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ॉर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़्हे पर वाक़िआ़ की तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये **म-दनी मर्कज़ दा'वते इस्लामी शाही मस्जिद शाहे आ़लम दरवाज़ा के सामने अह़मद आबाद गुजरात''**

''शो'बए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या**

नाम मअ़ वल्दिय्यत :..... उ़म्र..... किन से मुरीद या त़ालिब है ..... ख़त़ मिलने का पता..... फ़ोन नम्बर (बमअ़ कोड) : .....ई मेइल अेड्रेस ..... इन्क़िलाबी केसेट या रिसाले का नाम :..... सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़/महीना/ साल :..... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया :..... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी..... मुन्दरिजए बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फुलां फुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** के **''ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़त''** मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़्हे पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये।**

नम्बर शुमार	नाम	मर्द/ औरत	बिन/ बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल अेड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।